RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018
Post Customer ID-4000004011

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

# भारतीय जैन संघटना

# समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 3 अंक 10 | मूल्य - रू.1/- | अक्टूबर 2018 | पृष्ठ - 8

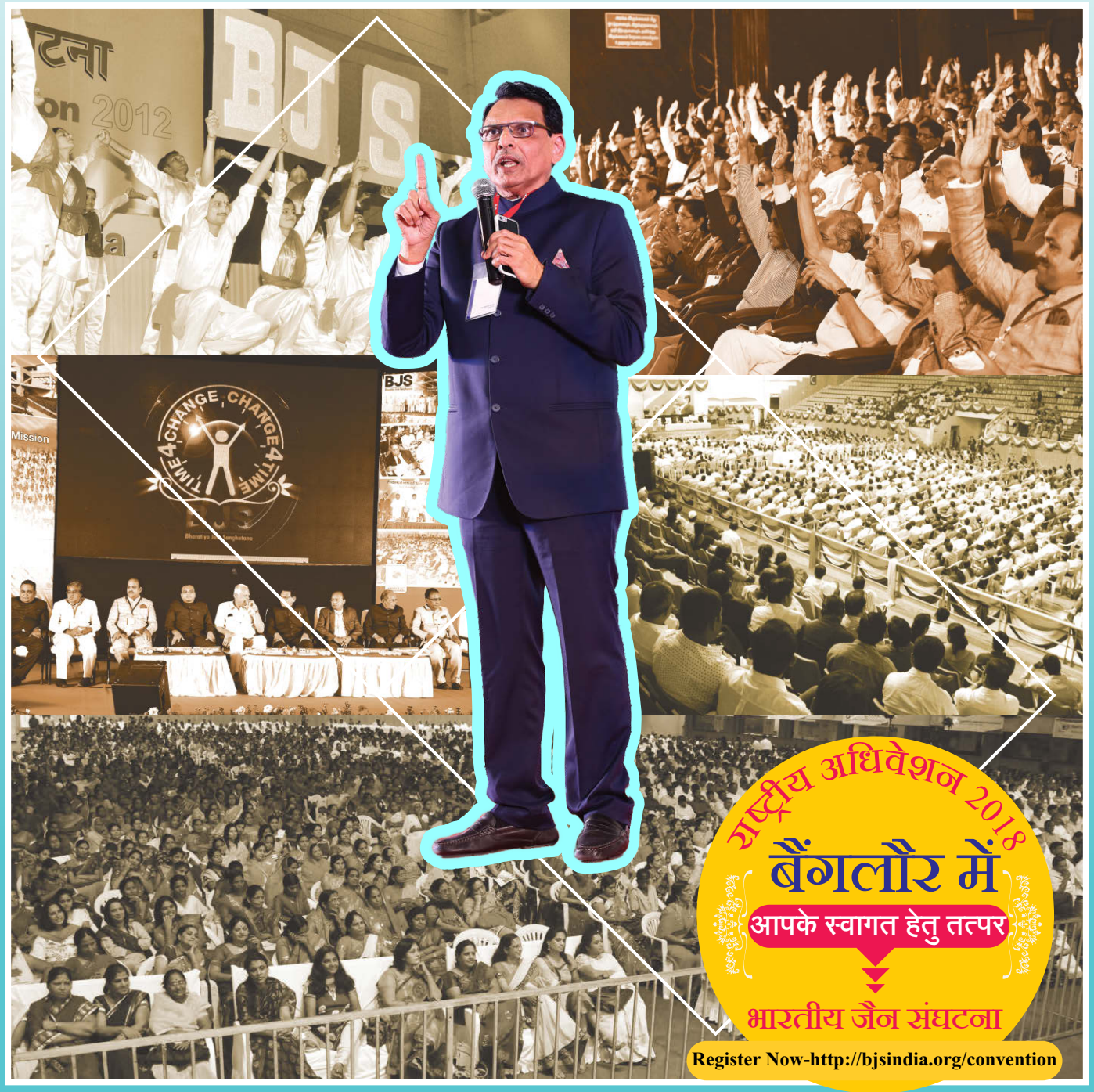


राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से .....2
वैचारिक मंथन के सशक्त मंच है
बीजेएस के राष्ट्रीय अधिवेशन .....3
लक्ष्यबद्ध कार्यप्रणाली से सिद्धियों के शिखर पर .....4
राष्ट्रीय अधिवेशन चैन्नई 2016 की चित्रमय झलकियाँ .....5
बीजेएस गतिविधियाँ एवं समाचार .....6-7

# राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

प्रिय आत्मजन,

भाद्रप माह में हम सभी ने पर्यूषण पर्व सहर्ष उत्सवित किया जो धार्मिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्धि पाने में हम सभी को प्रतिवर्ष मिलने वाला स्वर्णिम अवसर है. मानव मात्र के प्रति व्यक्तिगत, धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों को आचरण एवं व्यवहार की कसौटी पर स्वयं की परख करने तथा आत्मशुद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु आवश्यक प्रेरणा एवं शक्ति प्राप्त करने का श्रेष्ठतम स्त्रोत ही पर्युषण है. सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र हमारे व्यक्तिगत जीवन का ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का सूत्र होगा तब ही समता, धैर्य, शांति और अहिंसा समस्त विश्व में व्याप्त हो सकेगी. यह पर्व क्षमा की भावना के महत्व को विशेष रूप से उजागर करता है. जैन समुदाय ही नहीं अपितु भारत सहित समस्त विश्व 'क्षमा' के महत्व को समझे तो निश्चित ही अहिंसामयी विश्व की संकल्पना को यथार्थता के चक्र लग सकेंगे. दिवंगत राष्ट्रसंत परमपूज्य मुनिश्री तरुण सागरजी महाराज ने कुछ वर्षों पूर्व 'क्षमावाणी' दिवस को राष्ट्रीय पर्व घोषित करने की मांग की थी, जो आज हिंसाग्रस्त और रक्त रंजित विश्व के संदर्भ में अत्यंत ही प्रासंगिक है. सम्पूर्ण देश का जैन समुदाय यदि उनके नगर के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में 'क्षमा भाव' के संस्कार पल्लवित करने हेतु प.पू. मुनिश्री तरुण सागरजी के इस प्रस्ताव पर रचनात्मक पहल कर कार्य योजनाएं बनाएं तो निश्चित ही हमारे द्वारा उन्हें दी गई श्रद्धांजलि की सार्थकता सिद्ध होगी.

हम सभी भली-भांति अवगत हैं कि गत कुछ दशकों में परिवर्तन के थपेड़ों ने देश के ही नहीं अपितु समस्त विश्व के सामाजिक ताने-बाने को क्षति पहुंचाई है. सदियों पुरानी प्रस्थापित परिवार एवं समाज की संरचना चरमराने के फलस्वरूप विघटन की प्रक्रिया दिन-प्रतिदिन तीव्र हो रही है. अब परिवार का कार्यक्षेत्र एवं उद्देश्य आदि बहुत कुछ बदल जाने के साथ परिवार के सदस्यों के लैंगिक भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों में भी भारी बदलाव हम सभी स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहे हैं. परिवर्तन चक्र की गति पिछले कुछ हजार वर्षों में कभी इतनी असामान्य नहीं रही जितनी गत 50 वर्षों में रही है. समाज ही वह आधारशिला है जिस पर मानव अस्तित्व टिका है किन्तु परिवर्तन की आँधियों में उसका अधिकता से अस्थिर होना ही उसके अस्तित्व की चुनौती के साथ अनेक समस्याओं का कारण है. समाज को अनवरत स्थायित्व प्रदान करने में देश की सामाजिक संस्थाएं उनकी क्षमताओं के अनुरूप उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती आ रही हैं किंतु उनके प्रयत्न अब अप्रभावी से होते दिखाई देते हैं क्योंकि मनुष्यों की तरह उनकी भूमिकाओं में भी बदलते समय के अनुसंधान में परिवर्तन अपरिहार्य है, जिसे अधिकांश संस्थाओं को अब तक समझना शेष है.

मित्रों ! भारतीय जैन संघटना ने संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था के कुशल मार्गदर्शन में स्थापना काल से ही समय के साथ चलने में दक्षता प्राप्त की है, परिणाम स्वरूप वह उसकी कार्यप्रणाली एवं कार्यक्रमों में आवश्यकतानुरूप बदलाव लाती ही रही है. समाज के उत्थान विकास के कार्यक्रमों के साथ यह संस्था राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ कार्यरत है जो बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उत्तरदायी भूमिका निर्वहन हेतु आवश्यक है. आदरणीय मुथ्थाजी के द्वारा वर्ष 1985 में लगाया वृक्ष आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है. विभिन्न संस्थाओं तथा राज्य सरकारों के साथ मिलकर देश हित में कार्य करना उसकी विशेषता है. देश की भूमि से अधिक गहराई से जुड़ने के उद्देश्य से यह संस्था प्रत्येक दो वर्ष में राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन करती है जिसमें हजारों की संख्या में उसके पदाधिकारी,कार्यकर्ता तथा समाजजन सहभागिता करते हैं. अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य संस्था के आगामी दो वर्षों के कार्यक्रमों की कार्यसूची तथा लक्ष्यों को निर्धारित करना है. इस वर्ष 15 व 16 दिसंबर को बंगलौर (कर्नाटक) में राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें भाग लेने हेतु में आप सभी को भावभीना निमंत्रण ज्ञापित कर रहा हूँ. आशा करता हूँ कि समाज एवं राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में आप सदैव ही भारतीय जैन संघटना के साथ आपकी सहभागिता सुनिश्चित करते रहेगें.

**प्रफुल्ल पारख**
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

1985
2010 सुखी परिवार प्रगति का आधार
2012 BJS Jains for India
2014 परिवर्तन यात्रा नई पीढ़ी-नई सोच
2016 TIME 4 CHANGE - CHANGE 4 TIME BJS
BJS National Convention 2018 15-16 December @ Bengaluru


संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुंवा जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

मंथन

# सामाजिक वैचारिक मंथन का एक सशक्त मंच है भारतीय जैन संघटना का राष्ट्रीय अधिवेशन

मानव और समाज दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं क्योंकि एक के बिना दूसरे की कल्पना लगभग असंभव है. समाज मानव को स्थायित्व प्रदान करने की वह यंत्रणा है जो उसके जीवन यापन हेतु नितांत आवश्यक है. देश ही नहीं समस्त विश्व में समाज के स्वरूप भले भिन्न-भिन्न हों किंतु उनके कार्य और उद्देश्य लगभग समान ही होते हैं. समाज के सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर उनका सर्वांगीण एवं समुचित विकास करना ही उसके प्राथमिक लक्ष्यों में से एक है. समाज नाम की संस्था उसकी उद्देश्य प्राप्ति में सहायक हो सके इस हेतु सामाजिक संस्थाएँ अस्तित्व में आई और वे गत अनेक शताब्दियों से समाज, राज्य और देश की प्रगति में क्षमतानुरूप कार्य करती आयी हैं.

भारतीय जैन संघटना एक राष्ट्रव्यापी सामाजिक संगठन है जो इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वर्ष 1985 से संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था के मार्गदर्शन में कार्यरत है. इसका प्रसार देश के बड़े 12 से अधिक राज्यों में है. यह सैकड़ों पदाधिकारियों और हजारों कर्मठ कार्यकर्ताओं के पीठबल से समाज व राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में समर्पित संस्था है.

सामाजिक संस्थाओं की भूमिका एवं उत्तरदायित्व क्या और कैसे होने चाहिए ? यह सदैव से ही मंथन का ज्वलंत विषय रहा है, क्योंकि समाज को स्थायित्व प्रदान करने में उनकी कार्यप्रणाली, दक्षता एवं उद्देश्यों में समय-समय पर परिवर्तन अपरिहार्य होता है. देश की सामाजिक संस्थाएं प्रायः समयोचित परिवर्तन नहीं ला पाती, फलस्वरूप हमारे देश का समाज उतना प्रगतिशील और सुदृढ़ नहीं है जितना कि विश्व के अनेक देशों में है. किसी भी देश की प्रगति, समृद्धि और कानून व्यवस्थाओं की स्थिति के पैमाने का निर्धारण उसकी समाजिक स्थितियों से होता है, जिसमें सामाजिक संस्थाओं का रचनात्मक अंशदान महत्वपूर्ण होता है.

भारतीय जैन संघटना उसके स्थापना काल से ही बदलते समय तथा समाज की आवश्यकताओं के अनुसंधान में सदैव सजग रहकर उसकी कार्यप्रणाली, कार्यसूची, योजनाओं, कार्यक्रमों तथा उद्देश्यों आदि में व्यापक और समयोचित परिवर्तन लाने में महारथ प्राप्त कर चुका है. आज इस संस्था का विराट स्वरूप तो है ही, इसका कार्यक्षेत्र भी देश के क्षेत्रफल के अनुसंधान में लगभग आधे से अधिक है. इस संस्था की कार्य संस्कृति उच्च व्यावसायिक (Professional) कंपनियों की तरह व्यापक रूप से सामूहिक और अनुसंधान (Research) तथा अध्ययन आधारित वैज्ञानिक पद्धतियों से युक्त है. सुनियोजित कार्य योजनाओं का निर्माण तथा लक्ष्यबद्धता की पक्षधर यह संस्था समाज व राष्ट्र निर्माण में परिणामजनक भूमिका अदा कर रही है. उसने गति (Speed), व्यापकता (Scale) तथा कौशल्य (Skill) के मूल मंत्र को आत्मसात कर एक नई सामाजिक क्रांति को जन्म दिया है तथा देश की सामाजिक व अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं तथा सरकारों के समक्ष, समाज व राष्ट्र हित में नवीन कार्यप्रणाली के प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं जिसे अब व्यापक रूप से मान्यता मिल रही है.

बड़ी कंपनियों व औद्योगिक समूहों में कर्मचारियों, अधिकारियों तथा प्रबंधकों के मध्य नियमित सभाओं में विचार-विमर्श व सेमिनारों के आयोजनों से निश्चित परिणाम प्राप्त करने की आधुनिक वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियां गत कुछ दशकों में प्रचलन में आयी हैं. इसी तर्ज पर भारतीय जैन संघटना कार्यरत है और जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से समयानांतर सभाओं के अतिरिक्त प्रत्येक दो वर्षों में राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन करता है, जिसमें सम्पूर्ण देश से संस्था के पदाधिकारियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एवं समाजजन सहभागिता करते हैं. औद्योगिक एवं वाणिज्यिक समूहों की कार्यप्रणाली का आधार उसके सवैतनिक कर्मचारी होते हैं जबकि राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक संस्थाओं का आधार उसके कार्यकर्ता होते हैं, किन्तु भारतीय जैन संघटना ने सवैतनिक कर्मचारियों के साथ अवैतनिक कार्यकर्ताओं के सामंजस्य से कार्य उत्तरदायित्व तथा भावनात्मक उत्तरदायित्वों के साथ निश्चित परिणाम प्राप्त करने में महारथ प्राप्त की हुई है.

भारतीय जैन संघटना के दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन गत दशक से ही प्रत्येक दो वर्षों में आयोजित किए जाते हैं. वर्ष 2012 में पुणे में आयोजित रजत जयंती वर्ष अधिवेशन में एक नया इतिहास रचा गया जिसमें 10,000 समाजजन ने सहभागिता की थी और 'Jains for India' का मंत्र संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था ने दिया था.

जैन समाज को ही नहीं देश को नई दिशा देने पर गहन चिंतन मंथन इस अधिवेशन में हुआ. वर्ष 2016 में 5 व 6 नवंबर को चैन्नई में आयोजित अधिवेशन मील का पत्थर साबित हुआ है. 3000 से अधिक की उपस्थिति में अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय विद्वानों एवं वक्ताओं द्वारा गहन चिंतन के साथ 'Time for Change & Change for Time' सूत्र के साथ संस्था के आगामी दो वर्षों के क्रियाकलाप तथा लक्ष्य निर्धारित किए गए. संस्था की परंपरागत या वर्तमान कार्य योजनाओं एवं कार्यक्रमों पर उपस्थित जनसमूह की स्वीकृति से लक्ष्य निर्धारण के साथ-साथ ऐसी अनेक योजनाओं पर कार्यरत होने का लक्षयबद्ध संकल्प लिया गया, जो एक नवीन सामाजिक क्रांति का उद्घोषक प्रमाणित हुई हैं. आगामी अधिवेशन 15 व 16 दिसंबर, 2018 को बैंगलोर (कर्नाटक) में होने जा रहा है, जिसमें देश को नई राह पर ले जाने हेतु यह संस्था दृढ़ संकल्पित है.

संस्थागत एवं सामूहिक कार्यप्रणाली, कार्यक्रमों एवं योजनाओं के गत निर्धारित लक्ष्यों पर हुई प्रगति का मूल्यांकन, प्राप्त हुए परिणामों की समाज व देश हेतु उपयोगिता आदि पर नियमित चिंतन व समय के साथ चलते हुए आवश्यकताओं के अनुरूप बदलाव को स्वीकारने की क्षमताओं में वृद्धि करते हुए एक नवीन सामाजिक कार्य संस्कृति को समाज व देश हित में जन्म देने के साथ यह संस्था युवावस्था की ओर अग्रसर रहेगी.

# लक्ष्यबद्ध कार्यप्रणाली से सिद्धियों के शिखर तक

समाज तथा राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक अंशदान से भारतीय जैन संघटना गत 33 वर्षों से कार्यरत है. देश में कार्यरत अनगिनत सामाजिक संस्थाएं निश्चित कार्यक्षेत्र एवं परंपरागत कार्यप्रणाली अपनाकर सीमित दायरे में उनके उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती हुई स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं. जबकि भारतीय जैन संघटना परंपरागत कार्यप्रणालियों की सीमाओं से परे, सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन व्यापक एवं परिणामजनक स्तर पर करता आया है और यह उसकी विशिष्ट कार्यप्रणाली का भाग भी है. उसका निश्चिततौर पर मानना है कि परिवर्तनों के कारण सामाजिक संस्थाओं के उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र को समय समय पर पुनर्परिभाषित करना आवश्यक होता है और संदर्भित नवलक्ष्यों को दक्ष कार्यप्रणाली से सिद्ध करना चाहिए.

समाज व देश की बदलती परिस्थितियों के मद्देनज़र उत्पन्न हो रही सामाजिक व अन्य समस्याओं का अग्रिमरूप से रिसर्च आधारित अध्ययन कर समय से पूर्व हल खोजना, समाज को आगाह करना तथा आवश्यक कार्यक्रमों का निर्माण कर समाज उत्थान एवं विकास हेतु व्यापक स्तर पर परिणामजनक क्रियान्वयन के लक्ष्यबद्ध प्रयास करना ही भारतीय जैन संघटना की कार्य संस्कृति है.

भारतीय जैन संघटना ने उसकी गत 33 वर्षों की सामाजिक यात्रा में नए आयामों को प्रस्थापित तो किया ही है साथ ही में सामाजिकता की सीमाओं को राष्ट्रीय समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में नवपरिभाषित करने के सफल प्रयोग किये हैं. ऐसी समस्याएं चाहे वो प्राकृतिक आपदा हो या सामाजिक आदि जो अभी तक राज्य या केंद्र सरकार के कार्यक्षेत्र में हस्तगत रहीं, उन्हें भारतीय जैन संघटना ने सामाजिक उत्तरदायित्वों के दायरे में लाकर अभिनव प्रयोगों से नव-सामाजिक क्रांति का स्वरूप दिया है जिससे देशवासियों की सुषुप्त सामाजिक चेतना को जीवंत बनाने में आशातीत सफलता प्राप्त हो रही है. महाराष्ट्र के सूखा मुक्ति अभियान में जन-जन की भागीदारी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है.

भारतीय जैन संघटना ने 2016 में चैन्नई में आयोजित हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में उसके विभिन्न कार्यक्रमों पर द्विवर्षीय एवं त्रिवर्षीय लक्ष्य निर्धारण किये थे, जिसका विवरण सूची में प्राप्त परिणामों सहित प्रदर्शित हैं. 15 व16 दिसंबर, 2018 को बैंगलोर (कर्नाटक) में आयोजित होने वाले आगामी अधिवेशन में भारतीय जैन संघटना की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों पर लक्ष्य निर्धारण समाज व राष्ट्र निर्माण में मील का पत्थर प्रमाणित होगा क्योंकि एक बार पुनः भारतीय जैन संघटना ऐसे अनेक कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर आगामी वर्षों में लक्ष्य करने वाला है जिसमें राज्य व केंद्र सरकार तथा जन-भागीदारी से राष्ट्र निर्माण को निश्चित नवस्वरूप प्राप्त होगा.

भारतीय जैन संघटना के चैन्नई में नवम्बर, 2016 को आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में समाज-उत्थान- विकास तथा राष्ट्र निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये गये थे. जिसकी उपलब्धियां निम्न हैं :

- 3 वर्ष में 40 लाख विद्यार्थियों को मूल्य आधारित शिक्षण प्रदान करने के लक्ष्य को मात्र 2 वर्षों में ही पूर्ण कर लिया गया. पहली से पांचवीं कक्षा के महाराष्ट्र की 23 हजार स्कूलों के 40 लाख एवं गोवा के सभी स्कूलों के विद्यार्थी नियमित रूप से मूल्य शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं.
- 3 वर्ष में 2.5 लाख छात्राओं को सक्षम करने का लक्ष्य भी समय से पूर्व ही हासिल कर लिया गया. अहमदनगर, पुणे, सतारा, इंदौर, आंध्रप्रदेश, FJEI तथा बीजेएस नेटवर्क में मात्र 2 वर्ष में 2449 स्कूल की 320995 छात्राओं को स्मार्ट गर्ल कार्यक्रम व्दारा सक्षम किया गया.
- 3 वर्ष में 1000 विद्यार्थियों के शैक्षणिक पुर्नवसन के लक्ष्य को भी 2 वर्ष में हासिल कर लिया गया. पुणे स्थित वाघोली शैक्षणिक पुर्नवसन प्रकल्प एवं सतारा के रयत शिक्षण संस्थान में महाराष्ट्र के आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों एवं आदिवासी परिवारों के 1000 बालक/बालिकाओं का शैक्षणिक पुर्नवसन कार्य पूर्ण किया गया.
- 3 वर्ष में 3000 गाँवों को अकाल मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया था. मात्र 2 वर्ष में ही महाराष्ट्र अकाल मुक्त अभियान के अंतर्गत 1650 गांवों को अकाल मुक्त किया गया. साथ ही साथ सुजलाम-सुफलाम अभियान के अंतर्गत महाराष्ट्र के बुलढाना जिले को अकाल मुक्त करने का कार्य तेजी से चल रहा है.

भारतीय जैन संघटना व्दारा समाज निर्माण हेतु तय कार्यक्रमों के अंतर्गत जैन युवाओं एवं व्यापारियों हेतु 'व्यवसाय विकास कार्यक्रम' की कार्यशालाएं, जैन समुदाय हेतु अल्पसंख्यकता के अधिकार एवं लाभों की जानकारी हेतु कार्यशालाएं देश के विभिन्न राज्यों में नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं. निर्धारित लक्ष्य से अधिक 6000 युवक/युवतियों हेतु परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका हैं.

## समाजजनों को अल्पसंख्यकता के अधिकार एवं लाभों की जानकारी दी

### डॉ.विमल जैन का जबलपुर में सघन अभियान

संविधान व्दारा प्रदत्त अल्पसंख्यकता के अधिकार एवं लाभों की जानकारी जैन समुदाय तक दी जाने हेतु पूर्वी मध्यप्रदेश के आगामी राज्याध्यक्ष डॉ.विमल जैन ने 'पर्यूषण पर्व' के दौरान 17 से 25 सितम्बर2018 तक जबलपुर नगर में स्थित विभिन्न जैन मंदिरों में सघन अभियान को मूर्तरूप दिया.

डॉ. विमल जैन ने 17 सितम्बर को त्रिमूर्ति नगर, 18 को शास्त्री नगर, 19 को शिवनगर, 20 को पुरवा, 21 को जुड़ी तलैया, 22 को धनवंतरी नगर, 23 को आमनपुर, 24 को पार्श्वनाथ -तेवरी-कटनी एवं 25 को अजितनाथ -तेवरी-कटनी की सभाओं में 2500 से अधिक समाजजनों को संबोधित किया.

# भारतीय जैन संघटना - राष्ट्रीय अधिवेशन 2016-चेन्नई की झलकियाँ

# भूकंप की तबाही से उठ खड़े हुए, अब दुष्काल से भी होगें मुक्त

## महाराष्ट्र शासन व बीजेएस का संयुक्त अभियान : जून 2019 तक लातूर-उस्मानाबाद जिले होगें दुष्काल मुक्त

लातूर–उस्मानाबाद जिलों के भूकम्प ग्रस्त क्षेत्रों में पुनर्वसन के कार्य बेहतर तरीके से हुए हैं. जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप यहाँ के परिवारों हेतु घर व जगहका प्रश्न खड़ा हुआ है. राज्य शासन ने इन परिवारों को प्लाट देने के साथ ही इस क्षेत्र में जल उपलब्धि हेतु सोलर आधारित योजना को प्रभावी बनाएगी. यह उद्गार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फड़नवीस ने लातूर के सर्वाधिक भूकम्पग्रस्त क्षेत्र किल्लारी में भूकंप की दुर्घटना के 25 वर्ष पूर्ण होने के संदर्भ में आयोजित एक समारोह में व्यक्त किये. आपने कहा कि किल्लारीवासियो ने जिस तरह भूकंप का सामना डटकर किया उसी तरह अब राज्य शासन ने यहाँ जल युक्त शिवार योजना प्रारम्भ की है एवं भारतीय जैन संघटना के संयुक्त सहयोग से लातूर–उस्मानाबाद जिलें को आगामी जून तक दुष्काल मुक्त किया जाएगा.

पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने इस क्षेत्र में सुजलाम-सुफलाम का शुभारम्भ करते हुए कहा कि आप सभी के प्रेम के कारण मैं केंसर जैसी घातक बीमारी से बाहर निकल पाया हूँ अतः आप सभी का धन्यवाद करता हूँ. आपकी तकलीफ़ों को समझता हूँ. प्रसन्नता का विषय है कि अब यह क्षेत्र दुष्काल से भी शीघ्र ही मुक्त हो सकेगा. मंच पर उपस्थित पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि लातूर-उस्मानाबाद के लोग श्री शरद पवार व्दारा भूकंप के समय की गई मदद को कभी भूलेगें नही. वे यहाँ के लोगों के लिए हमेशा उपलब्ध रहते है. उनके नेतृत्व में यहाँ पुनर्वसन का कार्य बेहतर तरीके से हुआ हैं.

भारतीय जैन संघटना के आ.श्री शांतीलालजी मुथ्था ने इस समारोह में 25 वर्ष पूर्व लातूर में भूकंप के दौरान सैकड़ों बच्चों को गोद लेकर उनके शैक्षणिक पुनर्वसन के कार्य का स्मरण किया और कहा कि अब राज्य शासन के सहयोग से लातूर–उस्मानाबाद जिलों को दुष्काल मुक्त करने का उत्तरदायित्व भारतीय जैन संघटना ने लिया है. इस हेतु संस्था की ओर से जेसीबी / पोकलेन मशीन उपलब्ध कराते हुए जिले के डेम, तालाबों आदि की खुदाई से जमा हो गयी मिट्टी को निकालकर जल संग्रहण क्षमता में इजाफा करने के सभी प्रयत्न कर जून, 2019 तक यह योजना पूर्ण की जाएगी तथा यह क्षेत्र पानी टेंकर सप्लाई से मुक्त होगा, यह हमारा संकल्प है.

महाराष्ट्र शासन व भारतीय जैन संघटना के संयुक्त अभियान–दुष्काल मुक्त अभियान-'सुजलाम-सुफलाम्' अंतर्गत लातूर-उस्मानाबाद जिलों दुष्काल मुक्ति निर्धार समारंभ का आयोजन किल्लारी में 30 सितम्बर को किया गया, जिसमें श्री देवेन्द्र फडनवीस-मुख्यमंत्री-महाराष्ट्र, श्री शरद पवार-पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री, श्री शिवराज पाटिल-पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री, श्री शांतीलाल मुथ्था – संस्थापक बीजेएस, श्री संभाजीराव पाटिल निलंगेकर-पालक मंत्री-लातूर, श्री अर्जुन खोतकर-पालक मंत्री उस्मानाबाद, श्री अमित चंद्रा – ट्रस्टी-टाटा ट्रस्ट, श्री धनजय मुंडे – नेता विपक्ष, विधान परिषद् एवं क्षेत्र के वर्तमान व पूर्व सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि, कलेक्टर, प्रशासनिक वरिष्ठ अधिकारी सहित 15000 से अधिक ग्रामजन उपस्थित थे.

# बीजेएस राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति वर्ष 2016-18 की अंतिम सभा दिल्ली में सम्पन्न हुई

कार्यकाल वर्ष 2016-18 की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की दो दिवसीय अंतिम सभा दिनांक 1 व 2 अक्टूबर, 2018 को बीजेएस दिल्ली के आतिथ्य में होटल मेडन्स, सिविल लाईन्स, नई दिल्ली मे आयोजित हुई. सभा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी, सदस्यों सहित विभिन्न राज्यों के राजाध्यक्ष एवं राज्य सचिव उपस्थित रहे. दो वर्षों के कार्यक्रमों एवं प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया व समाज उत्थान-विकास व राष्ट्र निर्माण हेतु निर्धारित किए गए लक्ष्यों पर स्थिति मूल्यांकन किया गया. महाराष्ट्र सूखा मुक्ति अभियान में सत्यमेव जयते वाटरकप स्पर्धा तथा सुजलाम सुफलाम बुलढाणा (महाराष्ट्र) कार्यक्रम पर श्री सुदर्शन जैन एवं श्री अमर गांधी ने अभियान की विशेषताओं तथा सिद्धियों से सभा को अवगत कराया.

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख ने कहा कि बीजेएस को सूखा मुक्ति अभियान को जन-अभियान बनाने में सफलता प्राप्त हुई है तथा देश में नव-इतिहास रचा गया है क्योंकि राज्य व केंद्र सरकार दोनों हेतु ही अब जैन समाज की विश्वसनीयता का पात्र बन पड़ा है. हुबली में हुई गत सभा में सदस्यों को उनके राज्य में दौरा करने हेतु प्रार्थना की गई थी. राष्ट्रीय अध्यक्ष के पाँच राज्यों के दौरे के अतिरिक्त श्री राजेंद्र लूंकड़, श्री अमर गांधी, श्री हस्तिमल बंब, श्री दिनेश पालरेचा, डॉ. विमल जैन आदि ने उनके व्दारा किए गए दौरों का विवरण प्रस्तुत किया. व्यापार विकास अभियान के तहत इंदौर में आयोजित प्रथम बिजनेस कोनक्लेव पर संयोजक श्री राकेश जैन, इंदौर ने रिपोर्ट प्रस्तुत की व सभा ने अगला बिजनेस कोनक्लेव अप्रैल, 2019 में श्री राकेश जैन के नेतृत्व में श्री ओमप्रकाश लुनावत के सहयोग से बैंगलोर (कर्नाटक) में करने का निर्णय लिया गया. कॉलेज विद्यार्थियों हेतु नवउद्यमी विकास कार्यक्रम के पायलट प्रोजेक्ट किए गए हैं व इस कार्यक्रम को युवा वर्ग हेतु व्यापक स्तर पर क्रियान्वयन हेतु विचार-विमर्श कर आवश्यक निर्णय लिए गए. छात्र और छात्राओं के सक्ष्मीकरण हेतु संयुक्त कार्यक्रम विकसित करने हेतु हुबली सभा पर लिए गए निर्णय अनुसार श्री प्रफुल्ल पारख के नेतृत्व में इस कार्यक्रम को डिजाईन किया गया तथा इसके दो प्रायोगिक कार्यक्रम पुणे में हुए व व्यापक स्तर इस कार्यक्रम को ले जाने हेतु आवश्यक यंत्रणा पर चर्चा हुई.

सभा के व्दितीय दिवस श्री संस्थापक आ.श्री शांतीलालजी मुथ्था की उपस्थिति ने सदस्यों में जोश का संचार किया. आपने महाराष्ट्र सूखा मुक्ति अभियान पर किस तरह की कार्य योजना रही, कैसे राज्य सरकार तथा विभिन्न औद्योगिक गृहों का सहयोग प्राप्त हुआ व यह आंदोलन अब देशव्यापी आंदोलन बनाने जा रहा है इस पर विवरण प्रस्तुत किया. श्री मुथ्था ने 'मूल्यवर्धन' शिक्षा पर हुई प्रगति चर्चा की व सदन को सूचित किया कि यह कार्यक्रम 23,000 विद्यालयों के 40 लाख विद्यार्थियों तक पहुँच चुका है. आपने कहा कि बीजेएस की इन योजनाओं से देश में जैन समाज की विश्वसनीयता बढ़ने के साथ-साथ आदर भी बढ़ा है. श्री शांतीलालजी मुथ्था ने सभा से विचार-विमर्श कर सबकी सहमति से आगामी 5 वर्षों हेतु भारतीय जैन संघटना के नव राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर श्री राजेंद्र लूंकड़, इरोड के नाम की घोषणा की. इस अवसर पर सभा में दिल्ली जैन समाज के अनेक गणमान्य IAS अधिकारी आदि भी उपस्थित रहे.

सभा के अंत में बीजेएस दिल्ली एवं विशेषकर श्री राजेश खिवंसरा को धन्यवाद ज्ञापित किया गया.

## राजस्थान में - 'व्यवसाय विकास कार्यक्रम'

**आधी मेहनत-दुगुनी प्रगति** – श्री राकेश जैन, बडौदा

समाज, परिवार के लिए उपयोगी होंगे तो सभी आपका साथ देंगे: राकेश जैन

रावतभाटा में भारतीय जैन समाज की ओर से बिजनेस डवलपमेंट प्रोग्राम में विशेषज्ञ ने दी जानकारी

29 सितम्बर रावतभाटा

28 सितम्बर बूंदी

27 सितम्बर नसीराबाद

27 सितम्बर मालपुरा

28 सितम्बर कोटा

**दिल्ली**

दिनांक **21 अक्टूबर, 2018,** रविवार
पंजीयन की अंतिम तिथि **15 अक्टूबर, 2018**
पंजीयन हेतु संपर्क: **90243 33222**

**उदयपुर**
**(राजस्थान)**

दिनांक **11 नवम्बर, 2018,** रविवार
पंजीयन की अंतिम तिथि **5 नवम्बर, 2018**
पंजीयन हेतु संपर्क: **94141 60642 / 94141 55221**

उक्त परिचय सम्मेलनों में ऑनलाईन पंजीयन हेतु log in करें
**http://bjsmm.bjsapps.com**

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

# National Convention

**15th and 16th December 2018**

***Last Date for registration to get free accommodation is 15th November 2018***

***Hurry!!***

**Register Now:**

**http://bjsindia.org/convention**

To,

**RNI No.-MAHBIL/2016/66409**
**Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018**
**License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018**
**Post Customer ID 4000004011**
**Published on 07.10.2018**
**Posted at Market Yard PSO, Pune On-10.10.2018**

If undelivered Please Return To

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Muttha Chambers II, Senapati Bapat Road, Pune 411016
**Tel. : 020 6605 0220**
**Website:** www.bjsindia.org **Email :** info@bjsindia.org **Facebook :** www.facebook.com / BJSIndiacommunity **Tweeter :** BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था चेम्बर्स -२ , सेनापति बापट मार्ग, पुणे – 411016 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 6605 0220